# कला और शिक्षा

A module for KRP training

# सत्र की योजना

# कला क्यूँ होनी चाहिए ?

- बच्चे अपनी प्रकृति से ही रचनात्मक होते हैं - प्रत्येक बच्चा रचने के सामर्थ्य के साथ पैदा हुआ है
- बच्चे रचनात्मक रूप से खोजबीन करते हुए सीखते हैं
- सीखने के विविध कौशल पहले से बच्चों में होते हैं – प्रश्न करने, जांच करने, खोजने, काम करने, प्रयोग करने एवं खेलना
- स्वयं की खोज एवं स्वयं को अभिव्यक्त कर पाना और जगत की खोज एवं उसे समझना
- कलाओं के अनुभव महसूस करने व सीखने के भिन्न रूपों व तरीकों को आमंत्रित करते हैं
- कला के माध्यम से बच्चे बेहतर और तेज़ी से भी सीखते हैं
- समझ को विविध तरीकों से व्यक्त करने के लिए बच्चों को माध्यमों, तकनीकों व कौशलों की विस्तृत रेंज उपलब्ध कराती है

# कला – एक प्राकृतिक माध्यम

# कला क्यूँ?

स्वस्थ मानसिक विकास

मनोरंजन

संस्कृति की समझ

जिज्ञासा जगाना

सम्प्रेषण क्षमता

आनंद की अनुभूति

रोचक पढाई

चिंतन एवं मंथन

प्रयोग

सृजनात्मकता एवं नयापन

सहयोग एवं सहभागिता

रचनात्मकता

मूल्यांकन क्षमता

एकाग्रता एवं ध्यान केन्द्रण

निर्णय लेने की क्षमता

कल्पनाशीलता

अवलोकन क्षमता

सौन्दर्य बोध

आत्मविश्वास

अभिव्यक्ति

स्मरण शक्ति

Visualisation

Body balance & coordination

व्यक्तित्व निर्माण

सामजिक विकास

संवेदनशीलता

पहल करना

अब एक अधिक संतुलित शिक्षा की आवश्यकता है जहाँ विज्ञान,तकनीक और खेल सम्बन्धी विषयों के साथ मानव विज्ञान और कला शिक्षा भी शिक्षा के हर स्तर पर क़दम से क़दम मिला कर चले | जिसके दौरान बच्चे और किशोर ऐसी सीखने की प्रक्रिया में भाग लें जो उनके लिए फायदेमंद हो और उनमें बौद्धिक और भावनात्मक संतुलन बनाए रखें| ऐसे परिपेक्ष्य में खेल क्रियाएं सृजनात्मकता को सजीव बनाने का एक ऐसा कारक हैं जिसे कला शिक्षा में प्रोत्साहन की ज़रुरत है | कला शिक्षा शरीर के साथ-साथ मस्तिष्क को भी प्रेरित करने वाली होनी चाहिए | भावनाओं को गति प्रदान कर यह मस्तिष्क का विकास करती है | यह स्मृति बढ़ाती है जिससे संवेदनशीलता तीक्ष्ण होती है और वे अन्य विषयों के ज्ञान को प्राप्त करने के लिए सक्षम बनते हैं, मुख्य रूप से विज्ञान के लिए यह रचनात्मक योग्यताओं का विकास करती है और उनके आवेग को उनके मनपसंद कार्यों को करने की ओर मोड़ती है |"

**यूनेस्को के महानिदेशक की अपील(सत्र 2000)**

- **कला संज्ञानात्मक, भावनात्मक, और अभिव्यक्ति वाले क्षेत्रों के साथ अन्तः क्रिया करने वाली प्रक्रियाओं को अर्थ देती है**
- **कला के उद्देश्य–**
  - अवलोकन, खोजबीन करने और अभिव्यक्ति के माध्यम से बच्चों की सभी इन्द्रियों को/बोध को/ज्ञान को विकसित करना
  - जीवन के भिन्न-भिन्न पहलुओं के प्रति बच्चों को अपने विचार, भावनाएं अभिव्यक्त करने के अवसर देना
  - परिवेश में जो कुछ भी सुन्दर और अच्छा है उसके प्रति बच्चों को intigration पद्धति द्वारा जागरूक करना; उस सुन्दरता का लाभ/आनंद उठाने के प्रति उत्सुकता पैदा करना

# राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, 2005

# कला में क्या करवाएं?

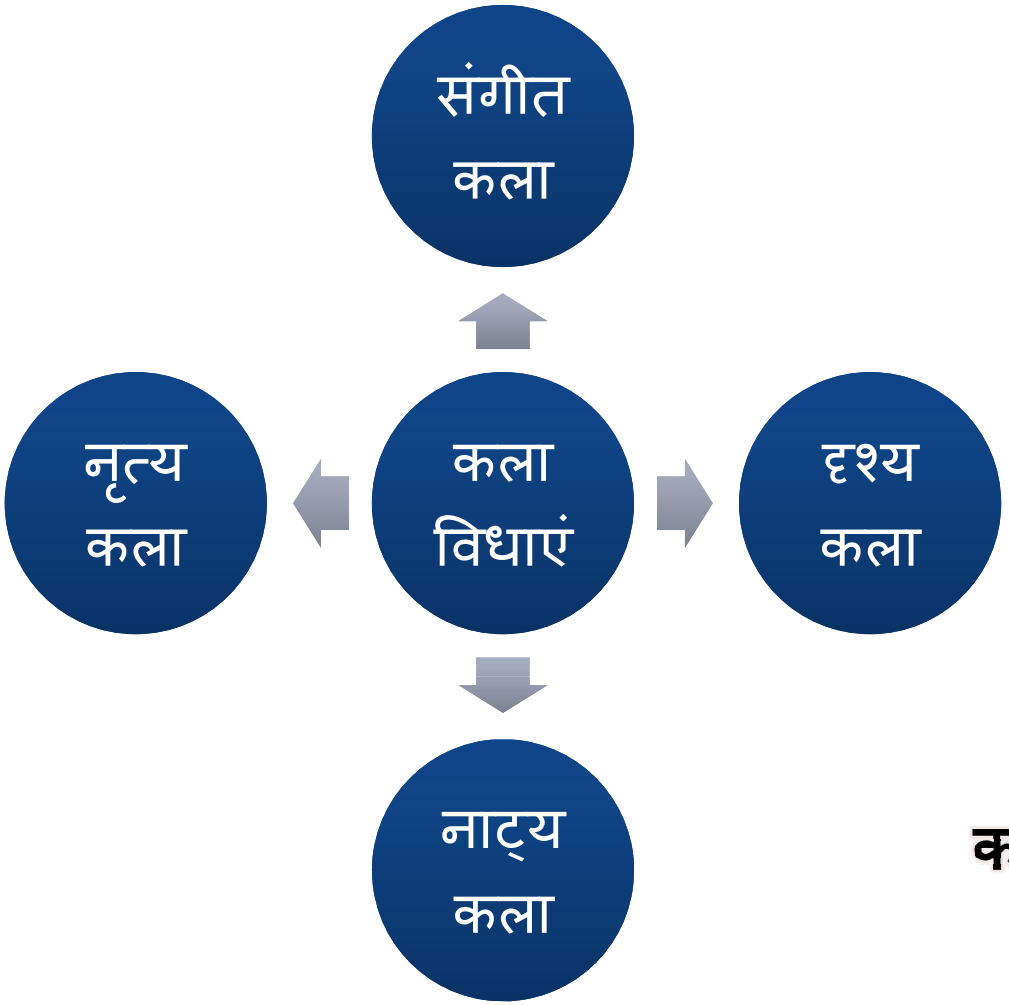


- एक अलग विषय
- बाकी विषयों के साथ Integration

## कला शिक्षा पर विद्यालयों में काम: दो आयाम

कला विधाएं – दृश्य कला एवं प्रदर्शनकारी कला

# कैसे करवाएं कला?

# क्या है Intigration ?

**माध्यम के रूप में कला**

- तर्क करने की योग्यता
- स्थूल वस्तुओं की मानसिक छवि
- पैटर्न, तर्क भाषा, गिनना, अनुपात, आदि
- विषयों को असल जीवन से जोड़ना
- विषयों के अन्दर अंतर्संबंध
- अमूर्तन को समझना

## Intigration क्यूँ?

- प्राकृतिक तरीका
- आन्ददायक एवं सहज सीखने की प्रक्रिया
- अन्य विषयों में मदद

कैसे समझें कला अभिव्यक्ति?

## अभिव्यक्ति कला का आधार

**अभियक्ति समझने के तरीके**

- प्रमाण, परिप्रेक्ष्य, यथार्थ चित्रण एवं रंगाकन, आदि का अभाव ही प्राथमिक आयु वर्ग के बच्चों की कला अभिव्यक्ति की विशेषता है
- बच्चों के साथ स्वतः स्फूर्त अभिव्यक्ति बहुत अच्छी तरह निकल कर आती है
- इस आयु वर्ग के बच्चों में कला कौशल के स्थान पर रूचि, संलग्नता, अभिव्यक्ति एवं कला प्रक्रिया को देखा जाना चाहिए
- बच्चों की अभिव्यक्ति में विविधता को प्रोत्साहन दें
- बच्चे का सृजन उसके परिवेश से जुड़े अनुभव, ज्ञान और समझ को ही प्रतिबिंबित करता है

# बच्चों की कला अभिव्यक्ति को कैसे समझें?

- गुणात्मक और प्रक्रिया आधारित
- प्रतियोगिता एवं परीक्षा आधारित नहीं
- निरंतर और व्यापक

# कैसे समझें?

- बच्चों की अभिव्यक्ति को समूह में देखा जाना चाहिए किन्तु बच्चे की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति कि विद्यालय द्वारा पहचाने की जानी चाहिए
- अनिच्छा होने पर बच्चों को अभिव्यक्ति के लिए बाध्य ना किया जाए
- इस अवस्था में ज़ोर बच्चे की मुक्त अभिव्यक्ति पर दिया जाना चाहिए
- प्राथमिक आयु वर्ग में कला शिक्षण में पुनरावृत्ति(दोहरान) एवं अभ्यास अत्यंत महत्वपूर्ण है
- शिक्षक को बच्चे की अभिव्यक्ति समझने की तरफ प्रयास करना चाहिए ना कि अपना एवं दृष्टिकोण थोपना चाहिए क्यूंकि बच्चों और वयस्कों की कला दृष्टि में अंतर होता है
- बच्चों की अभिव्यक्ति में उनके विचार को समझने की चेष्टा, शिक्षक को करनी चाहिए
- आकलन योजना से बच्चों की अभिव्यक्ति के विकास को देख एवं समझ पाएं

## कला शिक्षण एवं आकलन में किन बातों का ध्यान रखें

# धन्यवाद